श्री

ओ३म् ।

होमिओ पैथिक चिकित्सातत्व ।

अर्थात्

होमिओ पैथी „ नामक एक यूरोपीय विद्या के अनुसार

चमत्कृत प्रसिद्ध चिकित्सा सिखलाने वाली

एक सर्वोपयोगी परमोत्तम पुस्तक ।

जिसको मथुरा निवासी

आयुर्वेदज्ञ प० झल्लुस्वामी ने होमिओ पैथिक की अनेक उत्तमोत्तम वगदेशीय (बङ्गला) पुस्तको का सार सिद्धान्त लेकर एतद्देशीय हिन्दी भाषा जानने वाले उक्त होमिओ पैथिक चिकित्साभिलाषी मनुष्यो के उपकारार्थ सरल हिन्दी भाषा मे निर्माण किया

स्थान मथुरा

गुज्जर यन्त्रालय में बाबू रामचन्द्र मैनेजर के प्रबन्ध से मुद्रित कराया ।

प्रथम बार १००० { मूल्य प्रति पुस्तक ।।।) डाक महसूल सहित

श्रीगणेशायनमः

निवेदन



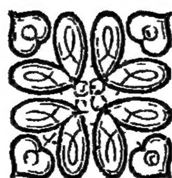
भारत वर्ष के हित कारक बाबू जोगेन्द्र नाथ मलिक होमिओ पैथिक डाक्टर महाशय को अपने शुद्ध चित्तसे अनेकानेक धन्यवादार्पण करता हूँ कि जिन्हों ने मेरे शुष्क हृदयमें होमिओपैथिक चिकित्सा का विद्यारूप कुल्हा उत्पन्न किया कि जिस्की स्तुती करने को मेरी लेखनी असमर्थ है परमेश्वर उनको धन, पुत्र सम्पन्न करै कि उनकी कृपासे होमिओ पैथिक चिकित्सातत्व नामक किताब देव नागरी अक्षर सुगम भाषा में भारत देश निवासी भ्रातृगणों के हित कारक अनेक प्रकार के रोगों का इलाज सिद्धान्त २ औषधिओं से प्रकाश किया है सर्व सज्जन पुरुषो को ज़ाहर हो कि इस इलाज के सिवाय चमत्कृत् इलाज दूसरा नहीं है— अतएव भारत देश निवासी भ्रातृगणों को धन्यवाद देताहूं कि मेरे श्रम क़ो देख कर परम प्रिय मित्रों के समान अपने २ हृदय को प्रफुल्लित करेंगे औ इस चमत्कृत् पुस्तक

को अपने २ गृहों में रखकर देशका हित करने को उद्यत होगे औ अपनी परम कृपालुतासे सहायता करैं क्योंकि और भी दो किताब आपके निवेदन करने को तैयार कर रहा हूँ आशा है कि किसी दिन इन को भी निवेदन करूँगा

आपकाशुभाभिलाषी वैद्यझल्लास्वामी

मण्डवीरामदास १६ नं०

आयुर्वेदोक्त मथुरा औषधालय



॥ ओ३म् ॥

॥ श्रीपरमात्मनेनमः ॥

होमिओपैथिक चिकित्सा-तत्व



नाड़ी गति विचार

निम्न लिखित चक्र में जो नाड़ी की संख्या है सो आरोग्य पुरुष स्त्रियों के लिये ठीक है परन्तु रोगावस्था मे न्यूनाधिक होजाती हैं यदि आरोग्य पुरुषों की नाड़ी की गति १ मिनट में ७० वार स्पर्श हो और स्त्रियों की ८० वार स्पर्श हो तो ठीक जानना क्योंकि स्त्रियों की १० गति पुरुषों से ज़ियादा होती है गर्मी, सूजन, ज्वर, अतिदुर्बलता अत्यन्त जागना, त्पैथौरा, के प्रथम दरजा सैलान, रुधिर क्रोध, जोश, आदि में ७० या ८० से १०० या १२० वरंच २०० तक नाड़ी की गति १मिनट में हो जातीहै एवं सर्दी, आलस्य, क्षुधा में, हवा के दवाव में, वेफिकरीमें, इत्यादि कारणों से नाड़ी की गति ऐसी न्यून होजाती है कि १ मिनट में ६० या ३९ तकही रह जाती है इन्हीं संख्याओंसे पुरुष स्त्रियोंकी उम्रभी मालूम होजाती है.

अवस्थाऽनुसार नाड़ीगति संख्या

समय	स्पर्श संख्या	अवस्था
एक मिनट में	१४०वारस्पर्श	हालकेहुएबच्चेकीनाड़ीहोगी
एक मिनट में	१२०से१३०तक	दूधपीनेवालेबाल्कोकीहोगी
एक मिनट मे	१०० वारस्प.	५ वर्षसे६ वर्षतकके बच्चोंकी
एक मिनट में	९० वार स्पर्श	६ वर्ष से १५ वर्ष के युवा-वस्था वालों की
एक मिनट में	७० से७५तक	१५ वर्ष से ३५ व्रर्ष के युवा वस्था वालों की
एक मिनट में	७०. वार स्पर्श	३५ वर्ष से ५० वर्प के वृद्धावस्था वालोकी
एक मिनट में	७५से ८०तक	५० वर्पसे अति वृद्धावस्था मे रपर्श होगी

थर्म्मा मेटर से गर्मी सर्दी का जानना

प्रथम थर्म्मामेटर यानी तापमान जंत्रमें पारा ९५ डिगरी से नीचा होवे तव रोगी की वगल में पारे की

तरफ़ से दबा कर ५मिनट तक परीक्षा करे यदि पारा९८॥ डिगरी चढ़े तो आरोग्य शरीर वाले का है यदि पारा १०१ डिगरी चढ़े तो पित्त की गर्म्मी से ज्वरादि रोग जान ने — १०४ डिगरी पारा चढ़ने से कठिन ज्वरादि रोग जाने जाते हैं यदि पारा १०६ डिगरी चढ़ जावे तो तेजगर्म्मी से असाध्य ज्वर जानना चाहिये इसी तरह ९७ डिगरी पारा चढ़ने से सामान्य सर्दी से ज्वर जानो यदि ९४ डिगरी पारा नीचे उतरे तो कठिन सर्दी से ज्वर जानो और ९३ डिगरी वा ९२ डिगरी पारा उतरे तो अत्यन्त सर्दी से असाध्य रोग जानना चाहिये।

चिकित्सा प्रकर्ण

रोग लक्षण, गर्मी, सर्दी, और कारण, जानकर औषधी देनेसे उपकार होता है गर्मी सर्दी इत्यादि जानेविना सिवाय नुक़सान के फ़ायदा कुछ नही होता

रोग निश्चय कर निम्न लिखित औषधी देने से १ घंटे के अन्दर रोग निश्चय दूर हो जाता है

सल्यूसनऔषधी नाम नम्बर या क्रम

सल्यूसन औषधी औ गोली नवीन रोगों में नीचे लिखे हुए नंबर की देना उचित है

सल्यू०औप० नाम	क्रम
आर्निका	३
आर्सनिक्	६
इपीकाकूआन्	३
ऊपीयम्	३
एकोनाइट्	३
एरेनिआ	३
एण्टीमोनियंक्रूड्	३
क्यमोमिला	३
कफ़िआ	३
कोलोसेन्स	३
ककूलस्	३
कलकेरिआ	६
कैमफ़र	३
कूमस्	३
कारवोविजेटेविलिस्	३
सीमसीफ्यूगार	३
साइलेसिआ	६
हेपर सलफ़र	३

स०औ० नाम	क्रम
च्यायना	३
जलसेमिनम्	३
डलकेमारा	३
नोक्सवोमिका	३
वेलोडोना	३
व्रायोनिआ	३
मारक्यूरियससोलोवि०	३
मारक्यूरीयस करोसी०	३
पलसेटिला	३
फ़ौसफ़र्स एसिड्	३
भरेड्रम्	३
रसटक्स	३
रीसीनस्	३
सीना	३
स्पंजिआ	३
सलफ़र	३
सिकेली	३
सीपिआ	३

औ-नाम	क्रम	औ-नाम	क्रम
लेकेसिस :	३	हेमेमिलिस	३
हाइडेसट्रिस्	३	हेसोमासि	३

पुराने रोगोंमें उक्तक्रम से जादा क्रम की औ- देना चाहिए क्योंकि जितनेक्रम ज़ियादा औ-होगी उतनाही वल ज़ियादा होगा

लोसन बनाने की क्रिया-

१२ हिस्सा पानी में १हिस्सा मदरटिंचर गेरकर खूब हिर। नेसे लासन होताहै(मदर टिंचर उस्को कहते हैं जिसे ड्येल्यू-ट नही कियाहै याने असली अर्क़) ॥

वाह्यप्रयोगौषधी

मदरटिं- आर्निका	चोट के ऊपर लोसन लगाने से फ़ायदा होता है
मदरटिं- केलेण्डुला	लोसन से घाव को धोना चाहिए
मदरटिं- हेमेमिलिस	ववासीर के मस्से को लोसन वना कर धोना चाहिये
मदरटिं- लीडम	लोसन मे भिगोकर खून जमेपै पट्टी
मदरटिं- रसटक्स	लोसन को गठिया के दर्दपे लगाना

मदराटिं-थ्यूजा	मस्से आदि के ऊपर लगाना
मदराटिं-विलोडोना	लोसन बनाकर सुर्ख नेत्रोंमें गेरना

सल्यूसनऔषधी गुणवर्णन

आर्निका गुण

चोट लगना, वच्चा होनेके पीछे औरतों के पेट पेडू में दर्द, गर्भवती औरतों के कलेजे औ पेट में जलन, चोट लगने से स्याह खून का जमना, खुश्क खाँसी के साथ कफ़ में खून आना, या भीतरली चोट से दर्द, वद, जूते से पैर में छाला, धनुर्वात, चोट से कोई रोग हो इन सब रोगों को नष्टकरता है

आर्निका गुण नाशक

आर्सेनिक; इपिका; नक्स; पलसेटि; सलफ़; आर्निका; कारवो विजैटेविलिस; कलके; नेट्र; फेरं; मरक्यू; विलो; सीपिया

आर्सेनिक गुण १

जाड़ेसे ज्वर, श्वेतकुष्ट, सर्वाङ्गसूजन, जलंधर, नसके

ऊपर का फोड़ा, गले का घाव, छाले, रीहकादर्द, खून का घटना, स्वास, दुर्बलता, गंज, शरीर की शिथिलता, मुँह का फवदना, फोड़े की सरै, आंख का जाला या धुंध, औरतों के भगका घाव सड़ना, विशूचिका हैज़ा, औरतों, का पांडु रोग, साँपका काठना, ज्वरके पीछे बाल उड़-जाने, गलेकी जलन, दारूकी तलव, बहुमूत्र, कष्टसे स्वास-आना, हाथ पैरोंकी जलन, मिरगी, शरीर में लाल चक-त्ते, महीन ज्वर, पुनरागम्य ज्वर, दिन रात में दोबार आने वाला ज्वर, थोड़ा २ रहकर के बहुत आने वाला ज्वर, सन्यपात ज्वर, अतीसार ज्वर, दुष्टहवा से ज्वर, दुर्भिक्ष ज्वर, विषम ज्वर, पान्डु ज्वर, सात दिन का ज्वर, पक्षका ज्वर, वार्षिक ज्वर, चहरे का दर्द, नाफ के ऊपर जलन बादी बवासीर, छाती की सूजन, तिल्ली, पान्डु, बावलापन यकृत, पथरी, शोक से मूर्छित रहना, पसली का शूल, बादी से मुहँ में पानी आना, कै होना, खाज, इन सर्व रोगों को नष्ट करता है

आर्सनिक् गुण नाशक

केम्फ़र, काफिआ, ऐकोनाइट, नक्स, आर्निका, सिरका

इपिका कूआन गुण

गर्भपात के रोगो में, विस्फोटक, कुच का फोडा, गुदा के बीच का फोडा, छाती में दर्द होके लोहू का आना, मूहँ से खून गिरे, दुख से स्वास का निकलना, स्वास लेते में छाती दुखे, ज्वर खाँसी, गलेमें कफ़ का घड़ घड़ा हट, आम के दस्त, एकाहक ज्वर, वार वार में ज्वर हाना, दुष्ट हवा से ज्वर, थोड़ी २ देर में खाँसी, लोहू की उबाकी, प्रदर, बार २ मै डकार, कै होना, इन सर्व रोगों को नष्ट करता है

इपिका गुण नाशक

आर्निका, आर्सनिक, नोक्स, केम्फ़र, सिरका,

ऊपियंगुण

हाम ज्वर, मूत्र रोग, आँत सम्बन्धी, पक्षा घात, शारीरक-जड़ता, इन रोगों को नष्ट करता है

ऊपीयं गुण नाशक

आर्निका, आर्सनिक, नोक्स, केम्फ़र, हींग,

एको नाइट गुण

चोट लगने से दर्द कहीं हो, हौल दिल वा दिल का धड़कना, रीह का दर्द, रुधिर विकार, स्त्री का श्वेत प्रदर, कफ़केसाथ लोहू आना, मगज़ की गर्म्मी, मुँहसे ख़ून निकलना, आँख में जलन, धुन्ध, सीतलाकी बीमारी, सर्दीसे सिर दर्द, हड़कल, सर्दी के सर्व रोगों में, खाँसी, तपेदिक्क, पेशाब करतेमें जलन, चक्कर आना, स्त्रियोंकोकष्टसेऋतुहोना आमसंयुक्तदस्त, कानमेंदर्द, सामान्यज्वर, वा सर्व प्रकार ज्वर, स्त्रीके कुच में दर्द हो के ज्वर, भगंदर, चहरे का दर्द पांडुज्वर, भयसेमूर्छा, नाफके ऊपर जलन, प्रमेह वायगोला, लोहू की उबाकी, रग छिटकना, यकृतकी सूजन, तापतिल्ली, बावसा, पेशाव में लोहू आना, रक्त, प्रदर, वादीसे कमरमें दर्द, स्त्रियों के बच्चेके पलटने में दर्द सीरोंट की फुंसी, कर्ण मूल में दाह. सोच से मूर्छा आंमवात, खुजाने से शरीर सूजना, पक्षाघात, छाती में दर्द, गाठिया, गुहेरी, सर्द गर्मी — एको नाइट इन सर्व रोगों को नष्ट करता है।

एको नाइट गुण नाशक

केम्फर, एसिड एसिटिक, सलफ़र, सिरका,

एरेनिआ गुण

पुराना ज्वर, छोड़ २ कर ज्वर आवै इनको नष्ट करताहै

एरेनिआ गुण नाशक

केम्फर, सिरका,

एण्टी मोनीक्रूडम् गुण

कै होना, जीमचलाना, अन्नका अपाक यानी न पचना इन सर्व रोगों को नष्ट करता है।

एण्टी मोनीक्रूडम् गुण नाशक

पलसेटिला, मार्क्यूरियस, हेपरसल्फ़र, केम्फर सिरका।

क्यमोमिला गुण

गर्भ पात के रोगों में, बच्चा होजाने के पीछे पेट में दर्द, पित्तविकार स्वास लेते में छाती दुखे, सामान्यसर्दी

से ज्वर, संग्रहणी, स्त्रियोंको कष्टसे ऋतू होना, दाहकज्वर, पुनरागम्य ज्वर, प्रसूतकाज्वर, सिरदर्द, बायगोला, गला बैठना, पीरिआ, मुँहपेमस्से, प्रदर, क्यमोमिलाइनसर्वरोगों को नष्ट करता है।

क्यमोमिलागुणनाशक।

केम्फ़र, नक्स, आर्स, आर्निका, इग्नेसिआ, सिरका पलसे,

काफिआ गुण

आनन्द से उत्पन्नरोग, बालकों का डरना, असह्य प्रसूत वेदना, अनिद्रा, गुल्म वायु, इन सर्व रोगों को नष्ट करता है

काफिआ गुण नाशक

एकोनाईट केम्फ़र, सिरका

कलोसेन्सगुण

पेट में शूल, अफरा, अपाक, आमलोहूका ऐंठा

कलोसेन्सगुणनाशक

कॉफिआ, क्यमोमिला, केम्फर,

कक्लूस गुण

स्त्रियों के ऋतू संबंधी सर्व प्रकार के रोगों को नष्ट करता है

कक्लूस गुण नाशक

केम्फर, कफिया, क्यमोमिला, नक्स, पल,

कलकेरीआ गुण

अपाक में, स्त्रीयों के प्रदर रोगों में, पेटवेदना हाथ पेरों का सीतल रहना, वहुत दिन रक्त श्रावसें दुर्वलता, इन सव रोगों को नष्ट करता है

कलकेरीआगुणनाश.

केम्फर, सलफर, आर्निका

केम्फर गुण

माथा दुखे, हाथ पेरों में वांयटे, अत्यन्त दस्त आने, मूर्छा विशुचिका याने हैजा, सर्दी की तरुणाव-स्थामें, श्रायु वी निस्तेजनमे, इतनें रोगों को नष्टकरता है

केम्फ़र गुण नाशक

ऊपीयं, सिरका इस्के गुनको नष्टकरते हे

कूप्रम गुण

आक्षेपक, सिरघूमना, मिरगी, खिलधरा, इनरोगों को नष्टकरता है

कूप्रम गुण नाशक

आँनिका, आर्सनिक, नक्स, केम्फर, इस्केगुणकोनष्टकरते है

कारवोविजेटेविलिस गुण४

पाकस्थली सम्वधीरोग, दाह युक्त दस्तआने, ववासीर, कृमि विकार, दाँतशूल, कूईनेन से उत्पन्न रोगोंको नष्टकरता है और कहीं २ जलंधर के आजारमें भी देते हैं

कारवोविजेटेविलिस गुणनाशक

आर्सनिक, कफिआ, केम्फर, लकासिस,

चायना गुण

जाड़ेका ज्वर, सर्वाङ्ग सूजन, लोहूका घटना, मन्दाग्नि, मसूड़ो से ख़ून गिरना, मगज़ की गर्मी से अंधापन मदराकी तलव, चक्करआना, अजीर्णदोष, द्वाहकज्वर, स्त्री के कुचमें दर्द हो के ज्वर, चेहरे का दर्द, विषमज्वर इनसव रोगों को चायना नष्ट करता है

चायना गुणनाशक

केम्फर, एकोनाईट, कफिआ, नक्स, आर्निका,

जलसीमिनं गुण

अजीर्णदोष, प्रसवकेरोग, वहुत तेज वुखार (१०० डिगरी से कम न हो) कर्णमूल, कान मे दर्द, इन रोगों को नष्ट करता है ।

जल सीमिनम्गुण नाशक

कैम्फर, सिरका,

डल्कामारा गुण

चुलकन, पेट में वेदना, रातमें सीत लगना, इन रोगों को नष्ट करता है ।

डल्कामारा गुण नाशक

इपिका, केम्फ़र, मार्क्यूरियस, इस्के गुण नष्ट करते है

नक्सवोमिका गुण

छाती से खट्टी डकार आना या भारीपन, वच्चा होनेके

पीछे पेटमे दर्द, सुराविकार, लोहू का घटना, शरीर सूखना सूंघने की शक्ति जाती रहना मंदाग्नि, पित्त विकार, स्त्रियों का श्वेत प्रदर, मगज की गर्म्मीसे अन्धापन हर जगह शरीर का फड़कना, औरतों का पाण्डु रोग, शर्द्दी से सिर दर्द, जूते से पैर का छाला, सामान्यसर्दी, पेट का दर्द कवज़ीयत, अचानक दर्द, खाँसी, ज्वर, पसरी का चलना, संग्रहणी, मदिरा की तलव, चक्कर आना, अजीर्ण, स्त्रियों का कष्ट से ऋतुहोना, नकसीर, पितज्वर एकाहिक, दिन रात में दोवार ज्वर, थोड़ी देरमें उतरजाय और फेर आने वालाज्वर, विपमज्वर, अफरा. नाफकी जगह ऐंठा, सिरदर्द वायगोला, छाती में जलन, लोहूकी उवाकी, विनादर्द छाती से लोहू आना. ववासीर. वहम, नपुंसक. पीलिया. यकृतवढ़ना. शोकसे मूर्छा, प्रदर, वारंवार डकार. दुःस्वप्न, दिल धड़कना. अकड़ाई. मुहँसे पानी आना. इतने रोगों को नष्ट करता है।

नक्सवोमिका गुण नाशक

केम्फर. आर्सनिक.

बिलोडोना गुण

गर्भपात के विकारों में, विस्फोटक, कुचका फोड़ा, गुदाके बीच का फोडा, दृष्टिमंद, रीहकादर्द, रुधिरविकार, नकसीर, रात्रान्धयानेरचोंद, नेत्रों की सुरखी, स्त्रीयों के कुचकादाह, खांसी. ज्वर में बाँयटा, सॉप काठे का विष, ज्वरमें पसरी का चलना, पेशाव करने में जलन या दर्द, कानपीड़ा, चक्कर आना, मिरगी, आंख की विरुनी का खराव होना, जहरबाद, सिर गरम होकर ज्वरआना, कायम ज्वर, महीनज्वर, फोड़ा फुंसी होकर ज्वर, प्रसूत का ज्वर, सन्निपात ज्वर, दुरभिक्ष ज्वर, पांडुज्वर, भयसे मूर्छा, नाक के ऊपर जलन, जीभमे दाह और खुश्की, मसूड़ोकाफूलना, सिरदर्द, वायगोला, सिरके ऊपर सूजन, लकुआ, यकृतका सूजना, रग छिटकना, कुत्ते का विष,नाकसे पानी वहना, वावरापन, पथरी, सीरोटकी फुंसी, कर्णमूल में दाह, कामोन्मत्त, पक्षाघात ज्वर, छाती का दर्द, स्वासनाली का दाह, माताकी वीमारीओं में, आंख की गुहेरी, अगड़ाई, सर्द गर्मी, दॉत का दर्द, गला वैठना, इन सर्व रोगों को वेलोडोना नष्ट करता वड़ा उपयोगी है।

विलोडोना गुण नाशक

ऊपीयम्. केम्फर,

ब्रायोनिआ गुण.

स्वास लेते मैं पसरी का दर्द, खांसी, छाती कादर्द, तपेदिक सिरगरम होके ज्वर, कायम ज्वर, महीन ज्वर, अतीसार ज्वर, यकृतका सूजना, छाती की सूजन, वादी से कमर का दर्द. दिल धड़कना. कैहोना, वादी के रोग, इन सबको नष्ट करता है।

ब्रायोनिआ गुण नाशक

इग्नेसिआ. एकोनाईट, क्यमोमिला, नक्सवोमिका, केम्फर

मार्क्यूरीयस सोलोविलसगुण

पुराने फोड़ा विस्फोटक में, कुचका फोड़ा, गुदा का फोड़ा, मुहांसे, गलेका घाव, छाले, गंज, पुरुष की इंद्री पर सुरखी, वा फुंसी, मसूड़ों से खूनका आना, आंखके

हलकका दर्द, मुखदुर्गन्ध,वद, कान में भन्नाटा, कंपनवाय, सामान्यसर्दी, खांसी ज्वर, पसरी का चलना, मूत्रकृच्छ, गले में जलन, आम के दस्त, कान वेहना, विरूनी खराव होना, मसूड़े फूलना, गले में पानी का गोला, प्रमेह, सिर्फ दस्त मे लोहू आना, गला वैठना, पीलिया, पेशावके साथ लोहू आना, यकृतका वढ़ना, स्त्रियोंके वच्चे के पलटे में दर्द, कर्ण मूल में दाह, रीह का दर्द, पक्षाघात, वच्चेकी इंद्रीका न खुलना, वादीका दर्द या गठिआ, आतशक, दाँतका दर्द, कृमि, इन सव रोगो को नष्ट करता है।

(मार्क्यूरियस कोरोसीवर के भी यही गुणजानना चाहिये)

मार्क्यूरियस सोलोव्लिस गुणनाशक

इग्नेसिआ, कफिआ. क्यमोमिला, नक्स; सिरका, केम्फर

पलसेटिलागुण

छाती से खट्टी डकार या भारीपन, स्त्रियों के वच्चा होने के पीछे पेट में दर्द, स्त्रियों के रजित का लोहू कम

आना, दृष्टिमंद, हौल दिल, सूंघनेकी शक्ति घटजाना, रुधिर विकार, मंदाग्नि, पित्त विकार, कान में भन्नाटा, सुजाक में तुंदी होना, औरतका पांडुरोग, पेटका दर्द जोरसे, बहरा पन, ओरतोंकाकष्ट से ऋतु होना, कान का दर्द, कान वहना, पित्त ज्वर, यकायक, स्त्रियोंके कुच में दर्द होके ज्वर, अफ़रा, भगन्दर, छाती में जलन, अन्ड कोष में पानी उतरना, नपुंसकता, स्त्रियोंके वच्चेके पलटे में दर्द, प्रदर, दिल धड़कना, गुहेरी, स्त्रीयोंके सर्व रोगों को नष्ट करता है

पलसेटिला गुण नाशक

कफिआ, क्यमोमिला, नक्स, इग्नेसिया, केम्फर।

फोसफ़रस एसिट गुण

स्वास लेते में छाती दुखे, शुक्रक्षय होने से दुर्बलता वालककी खांसी से लोहू गिरे, स्वरभङ्ग, शर्दी का ज्वर, सूखी खांसी, उदरामय, पुरानी खांसी, स्वास, वधिरता इन सव रोगों को नष्ट करता है।

फ़ोसफरसएसिट गुणनाशक

कफिया, केम्फर, नक्सवो, सुरा,

भरेड्रम गुण

रीढ़कादर्द, पित्तसे माथा दुखना रात्रान्धयानीरचौंध, असखुददर्द होना संग्रहनी, कै होना, इनको नष्ट करता है ।

भरेड्रम गुणनाशक

एकोनाईट, काफिया, केम्फर,

रस्टक्स गुण

चर्म रोगों में, वात के रोगों में, विषयल जानवर का काटना इन रोगो में बड़ा उपयोगी है

रस्टक्स गुण नाशक

काफिआ, केम्फर, ब्रयोनिआ, सलफर,

रीसीनस गुण

धूप से तापलगना, दूरचलने से तापहोना अग्नी का भवका लगकर तापहोना दस्त, या हैजेकीबिमरी इन सब रोगोंको नष्ट करता है ।

रीसीनसगुण नाशक,

केंम्फर, सिरका,

सीनागुण

बालकों के कृमिदोस से रोगोत्पत्ति, बच्चों की खाँसी, आदि रोगों को दूरकरता है परअजठराग्नी को शीघ्रमंद करता है

सीना गुण नाशक

केम्फर, सिरका

स्पञ्जिआ गुण

कण्ठमाला, स्वरभङ्ग, खाँसी, सर्दी,

स्पञ्जिआ गुण नाशक

केम्फर, सिरका,

सलफरगुण

पुरानाफोड़ा, मुँहासे, स्त्रियो के रुधिर कमआना, होलदिल, सूघ नेकी शक्ति जातीर है, मुखमेछाले, शरीर दुर्बल, पुरुष की सुपारी पर सुर्खी शरीर सिथल होकर बिछोने से घाव होजाना, स्त्रियों के सुपेद पानी पड़ना, मसूडों से खूनका निकलना, आँख के पलक का दर्द, नकसीर, मुखदुर्गंध, कंपनवाय, पेरका छाला, सामान्यसर्दी तपेदिक, कवजीयत, असखुदपेट में दर्द, ज्वर के पीछे

वाल उड़ना, वहरापन, अजीर्ण, ओरत का कष्ट सें ऋ-
तू होना, कान का वहना, जहरवाद, अफरा, भगंदर, ग-
ले में पानी का गोला, भनेह थोड़ी २ देर में दुखदाई
खांसी, सिर के ऊपर सूजन, छाती में जलन, लोहू की
उवाकी, सिर्फ दस्तमें लोहू आना, बवासीर, रगछिटकना,
गला वेठना, चितोन्मत्त, नपुंसक, पेसाव में खून आना,
यकृतकावढ़ना, कमर का दर्द, आम वात, खुजली या
खुजाने सें शरीर सूजना, पथरी, दुःस्वप्न, नाक में घाव,
पसरी का शूल, फुस २ नाली, मै दाह, आतशक, इतने
रोगों को नष्ट करता हे ।

सलफर गुण नाशक

अकोनाईट, क्यमोमिला, केम्फर, नक्सवो, पलसेटि-
ला, मार्क्यू, सीपिआ, इग्नेसिआ, सिरका, ।

सिकेलि गुण

प्रसव के रोगों में, नकसीर गर्भश्राव, अत्यन्त दुर्व

लता, रुधिर का पतरा पड़ना, रक्तकी हीनता, इत्यादि रोगो को नष्ट करता है।

सिकेलि गुण नाशक

केम्फर, सिरका,

सीपिआ गुण

स्त्रियों के ऋतू सम्बन्धी रोगों में, नकसीर, दाद, गर्भा वस्था की पीड़ा, इन रोगोंको नष्ट करता है

सीपिआ गुण नाशक

इपिका, कक्कूलस, पलसेटिला, केम्फर, सिरका, क्यमोमिला,

सीमसीफ्यूगार गुण

पथरी, छाती की जलन, पेट में भारापन, रात्रि में शरीरताप, इन रोगोंको नष्ट करता है

सीमसीफ्यूगार गुण नाशक

केम्फर, सिरका, ऊपीयं,

साइलेसिआ गुण

स्त्रियों के गर्भावस्था के रोगों को नष्ट करता है।

साइलेसिआ गुण नाशक

केम्फर, इग्नेसिआ, सिरका,

हेपरसलफ़र गुण।

पुरातन खांसी, गलेका घाव, पक्काफोड़ा, सर्दी, पेट का दर्द, दाद, खाज, स्वांस,

हेपरसलफ़र गुण नाशक

वेलोडोना, सिरका, केम्फर,

लेकेसिस गुण

एका हिक, दोदिन के अन्तर से ज्वर, कुइनेन सें अटका ज्वर इत्यादि रोगों को नष्ट करता है।

लेकेसिस गुण नाशक

आर्सनिक, कफ़िआ, केम्फ़र, वेलोडोना, क्यमोमिला, नेट्रम, नक्स, भरेड्रम, रस्टक्स

हेमेमिलिस गुण

ख़ूनी बवासीर, मस्से, नकसीर, रुधिर विकार, अफ़रा, रात में हाथ पेरों का गरम रहना, नेत्रों में दाह इत्यादि रोगोंको नष्ट करता है

हेमेमिलिस गुण नाशक

सिरका, केम्फ़र ,हींग

औषधी की मात्रा

पैदा हौने से २॥ वर्ष तक बच्चोंको मात्रा का चौथा हिस्सा और २॥ वर्ष सें लेकर १४ वर्ष पर्य्यंत आधी मात्रा १४ वर्ष सें लेकर जवानो को पूर्ण मात्रा दैना चाहिये पूर्ण मात्रा डयलूसन औषधी की एक विन्दू होती है फ़िल्टर कियेहुए पानी आधी छटाँक में एक विंदू गेरने से १ ख़ुराक़ होतीहै

औषधी सेवनका वक्त

भोजनसे १ घंटे पहिले वा पीछे, नये रोगोंमें यानी हैज़ा पसलीका दर्द या पसली का जल्द २ चलना, स्वास, बहुत ज़ोर का ज्वर, इत्यादि रोगों मे ५ मिनट या १० या १५ १५ मिनट में दवा दैना चाहिये और हलके रोगों में १ २ वा ३ घंटान्तर दैना। पुराने रोगों मे ४ वा ६ वा १२ वा २४ घंटान्तर दैना उचित है हर एक दवा को प्रथक्२दैना चाहिये जो रोग ज्यादा होवे उसरोगकी दवा पहिले और जो रोग कम होवे उसकी दवा उक्त लिखित

भकरानुसार देवे इसी तरह उलटा पलटा सें दवा सेवन करने से रोग दूर होगा।

रोग में पथ्य सेवन

ज्वर के वक्त उपवास, प्यास लगे तो शुद्ध ताजा सीतल जल, ज्वर उतरने के पीछे दूध या पानी में पका या हुआ साबू, वाली या आरारोट इत्यादि हलका। पथ्य भोजन कराना चाहिये ज्वर उतरने सें ८ घंटे के बाद अन्न देवे जबतक रोगी औषधी सेवन करे तबतक गरम मसाला, हींग, पत्ती की क़िस्म का साग, दारू, लाल मिर्च, तेल, खटाई, सुगन्धित वस्तु, तमाकू खाना या पीना मने है अगर तम्बाकू खाना पीना होतो १ घंटा पहले वा पीछे खाना पीना लाज़िम है।

औषधी रखने के नियम

दवा साफ़ शीशी में दैना और साफ़ जगह में रखना चाहिये जहां धूआं बू वास किसी भकार की नहो सर्दी

गर्म्मी किसी प्रकारकी धूप न लगे परन्तु केम्फ़र सब दवाओं से अलग रखना चाहिये ।

डिस्पिप्सिआ अर्थात् अजीर्ण

भोजन करी हुई वस्तु का पाक नहोवे उसे अजीर्ण कहते हैं अजीर्ण दोष होकर पेट में पीड़ा होती है और इस्से बहुत से रोग उत्पन्न होते हैं पुलाव यानी घृत मिली हुई या तेल से पकी हुई वस्तु वा कोई कठिन वस्तु के खाने से पेटमें विकार हुआ होवे तो (नक्स) या (पल्सेटिला)दैना उचित है यदि अजीर्ण से वमन होवे तो (आईरिस) देवे। खट्टाफल, खट्टारस, खाने से पेट में पीड़ा या दर्द होवे तो (कलोसिन्स) देने से जल्द फ़ायदा होता है अगर कमज़ोरी से अजीर्ण होवे तो (हाईड्रेस्टिस्) दैना चाहिए। यदि चिंता से अपाक हुआ होतो (नक्स) और जो रातके जागने से अपाक होवे तो (चायना) (एकोनाइट) उलटा पलटा से देवे—ठंड लगकर अपाक हुआहोतो (एको०) (आर्सनिक्)अच्छाहै वा(पलसेटिला) (मरकरी को०) देवे–अग्निमन्द होनेसे (चायना) या (क-

ल्केरिआ- अगर अजीर्ण से जी मिचलावे तो (इपिका) या (एण्टीमोनीक्रूड)-यदि अजीर्णसे हुचकी आती होंतो (नक्सवो०) (जलसेमिनं) (आर्सनिक्) इनमेंसे कोईसी एक औषधी देने से फ़ायदा होगा यदि हर वक्त मुहँ में पानी भरा रहे तो (मरकरी को०) या (नस्क)-जब अजीर्ण दोष में वहुत औषधी सेवन करचुका होवे तो वीच २ में सल्फ़र एकाद खुराक ज़रूर खाना चाहिये।

कान्ष्टीपेसन आर्थात् कबजिअत

घृतपक्क और गरिष्ट भोजन से क़्वाज़ियत होती है क़्वाज़िअत से भूख वन्द होजाय और ज्वर न होनेतो(नक्स) और मलसूख गया होवे,पेटमें दर्द,माथा दूखे, ज्वरहो,तो (ब्रायोनिआ) अगर वहुत ही क़्वाज़िअत होवे और ब्रायोनिआ से उपकार न होवेतो(हाइड्रेसटिस पहले नंवर का) या (मदराटिंचर) देने से ज़रूर फ़ायदा होगा अगर वहुत दिन से क़्वाज़िअत रहती हो तो सवेरे के वक्त(नक्स)और शाम को (सल्फ़र) देने से फ़ायदा होवेगा।

आमाशय

इस रोग में पहले पेट में दाह होता है वार २ दस्त आने की सी हाजत और कभी २ पेट में दर्द, थोड़ा २ ज्वर होता है सामान्य रूप से आमाशय में (पलसेटिला) देना चाहिये फ़ायदा होगा ।

वार्म्स या कृमिविकार

बच्चों के अजीर्ण दोष से कृमि पैदा होती हैं जब पेट में कृमि होती है तो दस्त पड़पड़ाट् के साथ होता है और मुख में पानी भर २ आता है, पेट में ज्यादा कृमि होवे तो बच्चा दांत किर्रा करता है, रात में चौंक २ उठता है ऐसी अवस्था में (हेसोमिस)बहुत अच्छी दवा है या (सीना)देना चाहिये ।

डिसेन्ट्री अर्थात् आंवलोहू ऐंठा

आंवके साथ लोहू आवे उसको-डिसेन्ट्री कहते हैं कभी २ इस रोग में लोहूकेही दस्त आते हैं मल त्यागने के समय किच्छना, पेट में ऐंठा हो और ज्वर भी होवे तो(एको-

नाईट) यदि आंव लोहू, संग २ आवे परन्तु लोहू ज्यादा आवे दर्द हो किन्च्छना पड़े, नाभिकी जगे दर्द हो,मरोड़ा, भूख वंद, पेट में अफ़रा, दर्दके मारे वेकली हो तो[कोलोसेन्स] [मरकरी] उलटा पलटा से देना चाहिये—यदि मरोड़ा, ज्यादा होवे, आंव के साथ लोहू भी ज्यादा आवे, पेशाव ज्यादा या थोड़ा या बिलकुल वन्द हो तो [मरकरी कोरोसीवर] देने से जल्द फ़ायदा होता है थोड़े लोहू युक्त या केवल आंव ही थोड़ा २ आवे ज्वर न हो तो [नक्स वोमिका] ज्वर होवे तो [ब्रायोनिया] देना उचित है।

निटिल ड्रास यानी आमवात

ज्वर में कुपथ्य यानी खट्टे आदि फल के खाने से या ठंड लगने से एक प्रकारकी सूजन और शरीर में चकत्ते पड़जाते है उसको आंव वात कहते हैं इसमें ज्वर होवे तो [एकोनाईट] देना चाहिये अगर ज्वर न होवे केवल सूजन ही शेष हो तो [अपीस] देना चाहिये—यदि ठंड से चकत्ते पड़े हों तो [ब्रायोनिआ] ओस लगकर रोग हुआ हो

तो [डल्कामारा] और जो कुपथ्य से रोग हुआ हो तो [पलसीटिला] अगर आंव वात हटजावे और सूजनादि रोग रहें तो [आर्सनिक १२ नम्बर का] देना चाहिये।

प्लायटी ऊलेंस या उदर विकार

अत्यन्त गरिष्ट भोजन करने से या कच्चे फलादिकके खाने से इस रोग की उत्पत्ति होती है किसी २ के पेट में बहुत दिन तक यह रोग रहता है और केचित इस रोग की उत्पति मानासिक चिन्ता होने से भी कहते हैं जो पेट में अफरा, या भारीपन होवे तो [नक्स] देना बड़ा उपयोगी होता है अत्यन्त गरिष्ट भोजन करने से रोगोत्पन्न हुआ होवे, वा तैलादि अपक्ववस्तु खाने से, और मुहंका स्वाद कड़ुआ मलके साथ आंव आवे तो [पलसोटिला] देना चाहिये—यदि बहुत गर्म्मी से पेट में पीड़ा, क्षुधामंद, कुपच के दस्त, शरीर दुर्वल होवे तो [चायना] बड़ा उपयोगी है मल के साथ आंव लोहू, आवे और पेट में अत्यन्त दर्द; मरोड़ा होवे, रात में दस्त ज्यादा आवें तो [मरकरी] देना चाहिये—यदि अत्यन्त गर्म्मी में वरफ़ वा

ठंडे पानी से इस रोग की उत्पत्ती होवे तो [ब्रायोनिया] यदि कृमि पड़कर रोगोत्पात्ति हो तो [हयसोमासि] अच्छी दवा है, और पतले दस्त, जीमचलाना, वमन होना इत्यादि उपसर्गों में [इपिका] देना चाहिये—अगर दस्त हरे रंग के पतले आवें पेट नाभी में छुरी से काटनेकीसी असह्य वेदना, अत्यन्त बेकली होवे तो [कलोसेन्स] आध २ घंटे मे देने से फायदा होगा।

कलेरा या विशूचिका

अनेक देशों का पानी और हवा दूषित होने से इस रोग की उत्पात्ति होती है अक्सर देखने में आता है कि यह रोग अजीर्ण से भी होता है और इसका पूरा २ हाल "विशूचिका शमन" नामक किताव अनेक ग्रन्थों मे से छांट कर मैंने प्रकाश किया है इसके देखने से पूरा हाल मालूम होगा, हमेशां यह रोग होतेही शीघ्र सांप के विषके समान सर्व देह मे अपना राज्य कर शरीर को महत्कष्ट देकर प्राण ले डालता है (१) पहले पानी या मांड़ के समान दस्त, और कै होना। जीमचराना घवराहट बढ़ता जाना य

पहली अवस्थाहै(२)नाड़ी अत्यन्तक्षीण,पेट मे विलक्षण दर्द इठना, पैरों मे वांयटे, कै, दस्तों का थोड़ा होना, प्यास ज्यादा, यह दूसरी अवस्था के लक्षण हैं(३)रोग की अत्यन्त वृद्धि, नाड़ी एक दम से क्षीण, वहुत देर में मालूम पड़े, आंख वैठजावें, पेशाव, कैवन्द होजावे, सव शरीर ठंडा पड़जाय, पसीना वहुत आवे यह रोग की तृतीय अवस्था के चिन्ह हे (४) रोग के उपसर्ग वन्द होकर धीरे २ ज्वर होजावे यह रोग की चतुर्थ अवस्था के गुण हैं(५)पहले सफ़ेद पानी के समान दस्त और कै होवे, प्यास मालूम हो, ठंड मालूम होवे, पेट मे थोड़ा २ दर्द, शरीर गरम, नाड़ी की गति तेज़, वेचैनी, ऐसी अवस्था मे [एकोनाईट]पन्द्रह२ मिनट में देना उचित है यह केवल पहली अवस्था में देना मुफ़ीद होता है यदि पानी या माड़ के समान दस्त, गुदा में जलन, वेचैनी, अत्यंत प्यास, पानी पीतेही कै, हो जावे, शरीर ठंडा या पसीना और भीतर शरीर मे दाह होवे तो [आर्सनिक्] पन्द्रह २ मिनट मे देना उचित है यदि हाथ पावों में वाँयटे आवें प्यास वहुत, कै दस्त जल्द २ आवैं तो [भरेड्रम्] देवे यादि जल्दी २ कै हो

वे तो [इपिका] हाथ पैर छाती और सब शरीर में वाँयटे आवै तो [क्योप्रम] अगर अजीर्ण से या कच्चे फला दिखाने से यह वीमारी हो तो [केम्फर] देना अच्छा है यदि धूप लग कर वीमारी हो तो [रीसीनस] देना चाहिये, यदि दस्त में काला खून आवे तो [कारवोविजेटेविलिस] अच्छी दवा है– अगर नाड़ी अत्यन्त मन्द हो जावे तो [हाइड्रो साईनिक एसिड] या [कारवोवि०] उलटा पलटा से देना चाहिये।

गर्भावस्थामें पीड़ा

गर्भ की अवस्था में स्त्रियो के अनेक रूप के रोग उत्पन्न होते हैं यथा वमन, दस्त की कवाज़िअत, पेट मे दर्द, कभी हाथ पेरों का सूजना, मुख मे पानी भरना, जीमचलाना, गर्भ की पहली अवस्था मे ऐसे २ रोग होते हैं यदि अत्यन्त वमन आवे तो [इपिका] दस्त की कवाज़िअत रहे तो [नक्स] अगर इससे उपकार न हो तो (व्रायोनिआ) देना चाहिये या (सीपिआ) देने से फ़ायदा होगा यदि पेट में दर्द वा और कोई उपद्रव या गर्भ नष्ट

होनें की सम्भावना हो तो (क्यमोमिला) इससे उपकार न दर्शे तो पलसेटिला) देना चाहिये हाथ पैर और उरू स्थान में सूजन होवे नाड़ी दुर्बल, वा शीतल होने से (आर्सनिक) देना चाहिये यदि सूजन जल्दी बढ़े प्रश्राव कठिन से होवे तो (एपीस) अगर सूजन के साथ आंवके समान दस्त आवें इसीसे दुर्वलता होवे तो (चायना) बड़ा उपयोगी होगा यदि मुखमें पानी भरा आवे तो (पलसे) देना चाहिये अगर मुखका स्वाद खट्टा वा कड़ुआ रहे तो (नक्स) यदि कूख में ज्वाला उठे तो (चायना) बड़ा उपकारी है।

इवोरसन मिसकेरस या गर्भका गिरपड़ना

गर्भावस्था में किसी तरह चोट लगजाय, या ऊंचे नीचे पेर पड़जावे, हाल लगने से, भयसे, गर्भ नष्ट होकर स्त्रियों के प्राणों को हान पहुंचाता है गर्भ श्राव होने से पहले शरीर स्वस्थ होजाता हे अत्यन्त असह्य वेदना होती है वहुत रक्त श्राव होने लगता हे उसी समय पेट, पेड़ू में दर्द हो २ कर रुधिर पानी के समान श्राव होकर गर्भ

नष्ट होजाता हे पूर्ण गर्भा वस्था में गर्भ नष्ट होते वक्त अनेक, रोग रूप उपसर्ग उत्पन्न होतेहै और अत्यन्त वेदना होती है एसी अवस्था में (सिकेली) पन्द्रे २ मिनट में देना चाहिये इसके देने से स्त्रियों के प्राणों पे सदमा नही पहुंचता है यदि अपरमित लाल वर्ण रक्त श्राव गर्भाधार की जगेह ताप ओर वेदना तीन महीने के गर्भ का नष्ट होना ऐसी अवस्था में (स्यावाईना) देना उचित है नाड़ी की गती मंद रुधिर का जादा ज्याना या भय से गर्भ का नष्ट होना असह्य वेदना मृत्यु का भय ऐसी अवस्था में (एकोना) बड़ा उपकारी होगा चोट लगने से वा अत्यन्त परिश्रम से गर्भ नष्ट हुआ होवे या गर्भ श्राव से पहले शरीर सिथल होवे तो (आर्निका) देना चाहिये ।

प्रसव

स्त्रियों को प्रसव काल के समान भयानक समय कोई नहीं आता हें जिसमें जीवन का भी सन्देह रहता है सहजही प्रसव होते समय उपाय करना चाहिये यदि सहज उपायों से प्रसव के रोग दूर न होवें तो औषधी सेवन कराना चाहिये ।

अगर प्रसव समय स्त्रियों के मुख की शक्ति हीनहो ओर ज्वर हो, शरीर दर्द करे, प्रसव होवे न ही एसी अवस्था में(जल से गिनं) फायदा करता है प्रसूती को अत्यन्त वेकली होवे तो (क्यमोमिला) देना चाहिए यदि वेदना की संज्ञावनीर है कवीजादा कवी कम तो (पल-सेटि) अगर भीतर नसोमे अधिक वेदना होवे तो (सि केली) देना और ज्वर रहै, किसी सें बोलने को मन न करै मुख लाल वर्ण, माथादुखे, हाथ पेरोंमे चेटी सी चलें वेदना अधिक हो तो [विलोडोना] देना चाहिये प्रसूती स्त्रियो को ज्वर की अवस्था में कोई रोग होवे प्रथम (आर्निका) यदि रोग निवारण नहो तो यथा रोग तथा दवा जैसे ज्वर मात्र में [एकोनाईट] १२ या ३२ नम्बर का देवे तो फ़ायदा होगा।

डिसमेनोरिआ

यानी

स्त्रियो के ऋतू सम्बन्धी रोग

स्त्रियों के हर महीने मे जो लोहू जाता है उसको

ऋतू कहतें हे इसी ऋतू काल के समय पेडू, कमर मे अधिक वेदना, जीका मचलाना, सिर दुखना, इत्यादि रोगों में [नोक्स वोमिका] देना चाहिये। यदि प्रसव कालकी सी वेदना होवे ओर काला गाढ़ा लोहू निकले वार२ पेशाव करने कीसी इच्छा रहे अत्यन्त वेचेनी इस अवस्था में (क्यमोमिला) देना चाहिये।

दाह युक्त ऋतू होवे, जंघा, पीठ, माथे में दर्द, ओर हाथ, पेरों में वांयटे आवें तो [सीमसी फ्यूगार] देना उचित हे थोड़ा२ लोहू आवे पेट मे पत्थर समान वोझ मालूम हो ओर गर्म्मी में वहुत रुधिर आवहोवेतो (पलसे टिला) पेट में छुरी चलाने कीसी वेदना होवे थोड़ा २ लोहू निकलकर वंद हो जावेतो (कक्कूलस) पुराना रोग होने से कवज़ीअत रहै ओर कम या जादा दिन तक लोहू निकला करै तो (सीपिआ) देना अच्छाहै और पैडूको गरम पानी सें सेकना फ़ायदेमन्द होता है ऋतू के दर्द होने सें पहले ४ या ६ दिन (सलफ़र) जरूर खाना चाहिए उक्त रोग पैदा नही होगा ऋतू काल में ठंडा भोजन, ठंडा पानी, ठंड मे रहना, ठंडी हवा मै डोलना

अगर प्रसव समय स्त्रियों के मुख की शक्ति हीन हो और ज्वर हो, शरीर दर्द करे, प्रसव होवे न ही ऐसी अवस्था में(जल से मिनं) फायदा करता है प्रसूती को अत्यन्त वेकली होवे तो (क्यमोमिला) देना चाहिए यदि वेदना की संज्ञावनीर है कबीजादा कबी कम तो (पलसेटि) अगर भीतर नसोमे अधिक वेदना होवे तो (सिकेली) देना और ज्वर रहै, किसी सें बोलने को मन न करै मुख लाल वर्ण, माथा दुखे, हाथ पेरोंमे चेटी सी चलें वेदना अधिक हो तो [विलोडोना] देना चाहिये प्रसूती स्त्रियो को ज्वर की अवस्था में कोई रोग होवे प्रथम (आर्निका) यदि रोग निवारण न हो तो यथा रोग तथा दवा जैसे ज्वर मात्र में [एकोनाईट] १२ या ३२ नम्बर का देवे तो फ़ायदा होगा।

डिसमेनोरिआ

यानी

स्त्रियो के ऋतू सम्बन्धी रोग

स्त्रियों के हर महीने में जो लोहू जाता हे उसको

ऋतु कहते हे इसी ऋतू काल के समय पेडू, कमर मे अधिक वेदना, जीका मचलाना, सिर दुखना, इत्यादि रोगों में [नोक्स वोमिका] देना चाहिये। यदि प्रसव कालकी सी वेदना होवे ओर काला गाढ़ा लोहू निकले वार २ पेशाव्र करने कीसी इच्छा रहे अत्यन्त वेचेनी इस अवस्था में (क्यमोमिला) देना चाहिये।

दाह युक्त ऋतू होवें, जंघा, पीठ, माथे में दर्द, ओर हाथ, पेरो में वांयटे आवें तो [सीमसी फ्यूगार] देना उचित हे थोड़ा २ लोहू आवे पेट मे पत्थर समान वोझ मालूम हो ओर गर्म्मी में वहुत रुधिर श्रावहोवेतो (पलसे टिला) पेट में छुरी चलाने कीसी वेदना होवे थोड़ा २ लोहू निकलकर वंद हो जावेतो (कक्कूलस) पुराना रोग होने से कवज़ीअत रहै ओर कम या जादा दिन तक लोहू निकला करै तो (सीपिआ) देना अच्छाहै और पैडूको गरम पानी सें सेकना फ़ायदेमन्द होता है ऋतू के दर्द होने सें पहले ४ या ५ दिन (सलफ़र) जरूर खाना चाहिए उक्त रोग पैदा नही होगा ऋतू काल में ठंडा भोजन, ठंडा पांनी, ठंड मे रहना, ठंडी हवा मै डोलना

ठंडी वस्तू खाना मने हैं यदि ऋतू समय पै न होवे या समय से पेहले होवे तो (पलसेटिला) अच्छीदवा है वाद इस्के (चायना) और [सलफर] अधिक ठंड से ऋतू वंद हो जावे तो [पलसेटिला] जरूर देवे अगर ज्वर होवे तो (एकोनाईट) और (पलसेटिला) उलटा पलटा से देना चाहिये फ़ायदा होगा ।

फीवर यानी ज्वर

ज्वर सव अवस्था में अनेक प्रकार से होता है यथा सर्दी से या सामान्य तरह से,वातज्वर,ज्वरातीसार, इत्यादि अनेक २ प्रकार से ज्वर होते हैं सचराचर शरीरो में अनेक सुभाव, अनेक अवस्था मे ज्वरका ताप होता है, और अधिक होने से ज्वर कहते हैं ज्वर से पहले शरीर मे हड़कल और सुस्ती उत्पन्न होती है हाथ पाम माथा भड़कता है भूख बन्द होजाती है किसी काम मे मन नहीं लगता यह ज्वर के सामान्य लक्षण हैं ।

सर्दी का ज्वर

सामान्य सर्दी, नाक से पानी का निकलना या भड़कन का होना ऐसी अवस्था में (आर्सनिक) देना अच्छा है सर्दी से ज्वर उत्पन्न होवे ताप जादा हो नाड़ी की गति तेज जिव्हा सूखे तो (एकोनाईट) यदि सरदी से कफ गले में घड़ २ बोले गला बैठासा होजावे और कही २ शरीर मे दर्द, ऊपर से सर्दी मालूम हो भीतर गर्मी हो तो (क्यमोमिला) अधिक छींक आना, नाक से पानी गिरना, गले मे दर्द, स्वाँस का गरम निकलना ऐसी अवस्था मे (मरकरी सोलोविलिस) देना चाहिये।

यदि गला बैठा हो, अत्यन्त सर्दी लगे, पसरी मे दर्द और सूखी खाँसी होवे तो (फोसफर्स) देना अच्छा है।

फीवरसिंपिल

यानी सामान्य ज्वर

पहले थोड़ी सरदी मालूम होकर ज्वर का प्रारम्भ

ठंडी वस्तू खाना मने हैं यदि ऋतु समय पै न होवे या समय से पेहले होवे तो (पलसेटिला) अच्छीदवा है बाद इस्के (चायना) और [सलफर] अधिक ठंड से ऋतू बंद हो जावे तो [पलसेटिला] जरूर देवे अगर ज्वर होवे तो (एकोनाईट) और (पलसेटिला) उलटा पलटा से देना चाहिये फ़ायदा होगा।

फीवर यानी ज्वर

ज्वर सब अवस्था में अनेक प्रकार से होता है यथा सर्दी से या सामान्य तरह से,वातज्वर,ज्वरातीसार, इत्यादि अनेक २ प्रकार से ज्वर होते हैं सचराचर शरीरो में अनेक सुभाव, अनेक अवस्था मे ज्वरका ताप होता है और अधिक होने से ज्वर कहते हैं ज्वर से पहले शरीर मे हड़कल और सुस्ती उत्पन्न होती है हाथ पाम माथा भड़कता है भूख बन्द होजाती है किसी काम मे मन नहीं लगता यह ज्वर के सामान्य लक्षण है।

सर्दी का ज्वर

सायान्य सर्दी, नाक से पानी का निकलना या भड़-कन का होना ऐसी अवस्था में (आर्सनिक) देना अच्छा है सर्दी से ज्वर उत्पन्न होवे ताप जादा हो नाड़ी की गति तेज जिव्हा सूखे तो (एकोनाईट) यदि सरदी से कफ गले में घड़ २ बोले गला बैठासा होजावे और कहो २ शरीर मे दर्द; ऊपर से सर्दी मालूम हो भीतर गर्मी हो तो (क्यमोमिला) अधिक छींक आना, नाक से पानी गिरना, गले मे दर्द, स्वाँस का गरम निकलना ऐसी अवस्था मे (मरकरी सोलोविलिस) देना चाहिये ।

यदि गला बैठा हो, अत्यन्त सर्दी लगे, पसरी मे दर्द और सूखी खाँसी होवे तो (फोसफर्स) देना अच्छा है ।

फीवरसिंपिल

यानी सामान्य ज्वर

पहले थोड़ी सरदी मालूम होकर ज्वर का प्रारम्भ

होवे तव शरीर मे अत्यन्त ताप भड़कन, और प्यास, माथा दुखे, सुस्ती, नाड़ी की गति तेज स्वाँस जादा चले पसीना थोड़े आमे, भूख वन्द हो जावे, कवज़ीअत रहे ऐसी अवस्था में [एकोनाईट] देना चाहिये अथवा (एकोनाईट) (विलोडोना) उलटा पलटा से देना उचित है। यदि ज्वर ज़ियादा होवे तो घंटांतर औषधी सेवन करावे जवतक ज्वर हलका न पड़ जावे, यदि कव्ज़िअत ज्वर का प्रधान कारण होवे और इसीसे पेट, नाभी में दर्द और ऐंठा होतो (ब्रायोनिआ) देकर दस्त करावें यदि ज्वर शेष रहजावे तो फिर (एकोनाईट) देना शुरू करें फ़ायदा होगा

सविरामःज्वर।

पूरब और पश्चिमोत्तर देशो में सविरामःज्वर प्रायः सदॅा जगे देखने में आता है इसी सविरामः ज्वर सें समय २ मेलेरिआ ज्वर उत्पन्न होता है सविरामः ज्वर छोड़ २ कर आता है ४वा ५। ६ घंटा भोगता है ओर

कभी २ इस्से अधिक वी भोगता है शरीर की खभाव अवस्था में रहता है और समय पाकर ऊपर आयजाता है यह सचरा चर को रहता है इस्की ३ पृथिक २ अवस्था होती है (१) पहली सीतावस्था जिस्मे जाड़ा लगकर ज्वर आवे (२) दूसरी उत्ताप अवस्था जिस्मे शरीर गरम होकर ज्वर आवे (३) तीसरी घरमा वस्था जिस्मे भीतर वाहर गर्म्मी वहुत मालूम होती है उसे सीतावस्था भी वोलते हैं ज्वर को पाला ज्वर भी कहते हैं यह ज्वर १२ वा २४ । ४८ घंटे में छोडत्ता है यदि सीत मालूम पड़े, वमन, माथादूखे, प्यास भूख वंद, हो तो (चायना) देना चाहिये यदि शरीर में अत्यन्त ताप और ज्वाला प्यास, अधिक प्लीहा यकृत मैं दर्द, दुर्वलता, मुख पीतवर्ण होवे तो (आर्सनिक देवे यदि ज्वर के संग थोडी खाँसी होवे तो (इपिका) देने से फ़ायदा होगा अगर इस्से फ़ायदा नहो तो (एकोनाईट) देना उचित है ज्वर के संग वारवार वमन की इच्छा, पेटमें दर्द, पेट में गड़गड़ाट होवे तो (इपिका) (एकोनाईट) उलटा पलटा से देना चाहिये अगर अम्ल

होवे तव शरीर में अत्यन्त ताप भड़कन, और प्यास, माथा दुखे, सुस्ती, नाड़ी की गति तेज स्वाँस जादा चले पसीना थोड़े आमे, भूख वन्द हो जावे, कवज़ीअत रहे ऐसी अवस्था में [एकोनाईट] देना चाहिये अथवा (एको-नाईट) (विलोडोना) उलटा पलटा से देना उचित है। यदि ज्वर ज़ियादा होवे तो घंटांतर औषधी सेवन करावे जवतक ज्वर हलका न पड़ जावे, यदि क़ब्ज़िअत ज्वर का प्रधान कारण होवे और इसीसे पेट, नाभी में दर्द और ऐठा होतो (ब्रायोनिआ) देकर दस्त करावें यदि ज्वर शेष रहजावे तो फिर (एकोनाईट) देना शुरू करें फ़ायदा होगा

सविरामःज्वर।

पूरव और पश्चिमोत्तर देशो में सविरामःज्वर प्रायः सदाँ जगे देखने में आता है इसी सविरामः ज्वर सें समय २ मेलेरिआ ज्वर उत्पन्न होता है सविरामः ज्वर छोड़ २ कर आता है ४वा ५। ६ घंटा भोगता है ओर

कभी २ इस्सें अधिक वी भोगता है शरीर की स्वभाव अवस्था मे रहता है और समय पाकर ऊपर आयजाता है यह सचरा चर के रहता है इस्की ३ पृथिक २ अवस्था होती है (१) पहली सीतावस्था जिस्मे जाड़ा लगकर ज्वर आवे (२) दूसरी उत्ताप अवस्था जिस्मे शरीर गरम होकर ज्वर आवे (३) तीसरी घरमा वस्था जिस्मे भीतर बाहर गर्म्मी बहुत मालूम होती है उसे सीतावस्था भी बोलते हैं ज्वर को पाला ज्वर भी कहते हैं यह ज्वर १२ वा २४ । ४८ घंटे में छोडता है यदि सीत मालूम पड़े, वमन, माथादूखे, प्यास भूख वंद, हो तो (चायना) देना चाहिये यदि शरीर में अत्यन्त ताप और ज्वाला प्यास, अधिक प्लीहा यकृत में दर्द, दुर्वलता, मुख पीतवर्ण होवे तो (आर्सनिक देवे यदि ज्वर के संग थोडी खाँसी होवे तो (इपिका) देने से फ़ायदा होगा अगर इस्से फ़ायदा नहो तो (एको-नाईट) देना उचित है ज्वर के संग वारवार वमन की इच्छा, पेटमें दर्द, पेट में गड़गड़ाट होवे तो (इपिका) (एकोनाईट) उलटा पलटा से देना चाहिये अगर अम्ल

यानी छाती में खटाइ प्रधान कारण है पेट, कलेजे में अग्नि का दाह और पेट भारी, अम्ल का उफार ऐसी अवस्था में (नक्स वोमिका) देना चाहिये ।

फ़ीवर क्वीइटेडन या एकज्वर

जव ज्वर नही छोड़े क्रम से भोगे अथवा सामान्य रूप से शरीर में कमताप रहै और ३ वा ४ दिन पीछे सामान्य ज्वर कासा ताप वढ़े उस्को एक वा इकतरा ज्वर वा स्वल्प विराम ज्वर कहते है शरीर में दाह, प्यास, सुष्कता, स्थिरता, वमन, माथा दुखना, पेट में दर्द, मस्तक भारी, ऐसी अवस्था में पहले (एकोनाईट) देना चाहिये माथा अत्यन्त दुखे, मुख लाल वर्ण, प्यास बहुत हो तो (विलोडोना) या (एकोनाईट) उलटा पलटा से देना उचित है यदि ज्वर विशेप हो तो [एकोनाईट] १ नम्बर का देना चाहिये यदि १ दिन शरीर में ताप कम होवे और दूसरे तीसरे वा चोथे दिन ज़ादा वढ़े तो [जलसे मिनं] देने से फायदा होता है ।

फ़ीवर०लीयस या पित्तज्वर

यह ज्वर पित्ताधिक होकर शरीर को तपाता है कभी २ पित्त की कै भी होती हैं खट्टी डकार आती हैं इस ज्वर वाले को [एकोनाईट] [पलसे टिला] उलटा पलटा से देना चाहिये।

हेकटिक् फ़ीवर या विषम ज्वर

यह ज्वर मेदा, मज्जा; धातु, अस्थी, रुधिर, माँस इनमें निवास करता है चाहे जिस वक्त शरीर को तपाता है ऊपर जाड़ा लगे और भीतर दाह हो ऐसी अवस्था में (एकोनाईट) अगर पुराना हो जावे और पसली में दर्द होवे तो (ब्रायोनिआ) अगर कफ़ खांसी हो तो (आर्सनिक) भूख मन्द और शरीर दुर्बल हो तो [सलफर] देना चाहिये।

फ़ीवर एन्तारिक् या महीन ज्वर

यह ज्वर भीतर अपना असर करता है इस ज्वर

यानी छाती में खटाइ प्रधान कारण है पेट, कलेजे में अग्नि का दाह और पेट भारी, अम्ल का उफार ऐसी अवस्था में (नक्स वोमिका) देना चाहिये।

फ़ीवर क्वीइटेडन या एकज्वर

जब ज्वर नहीं छोड़े क्रम से भोगे अथवा सामान्य रूप से शरीर में कमताप रहै और ३ वा ४ दिन पीछे सामान्य ज्वर कासा ताप बढ़े उस्को एक वा इकतरा ज्वर वा श्वल्प विराम ज्वर कहते है शरीर में दाह, प्यास, सुष्कता, स्थिरता, वमन, माथा दुखना, पेट में दर्द, मस्तक भारी, ऐसी अवस्था में पहले (एकोनाईट) देना चाहिये माथा अत्यन्त दुखे, मुख लाल वर्ण, प्यास वहुत हो तो (विलोडोना) या (एकोनाईट) उलटा पलटा से देना उचित है यदि ज्वर बिशेष हो तो [एकोनाईट] १ नम्वर का देना चाहिये यदि १ दिन शरीर में ताप कम होवे और दूसरे तीसरे वा चोथे दिन ज़ादा वढ़े तो [जलसे मिंन] देने से फायदा होता है।

फ़ीवरब्लीयस या पित्तज्वर

यह ज्वर पित्ताधिक होकर शरीर को तपाता है कभी २ पित्त की कै भी होती हैं खट्टी डकार आती हैं इस ज्वर वाले को [एकोनाईट] [पलसे टिला] उलटा पलटा से देना चाहिये।

हेकटिक् फ़ीवर या विषम ज्वर

यह ज्वर मेदा, मज्जा; धातु, अस्थी, रुधिर, माँस इनमें निवास करता है चाहे जिस वक्त शरीर को तपाता है ऊपर जाड़ा लगे और भीतर दाह हो ऐसी अवस्था में (एकोनाईट) अगर पुराना हो जावे और पसली में दर्द होवे तो (ब्रायोनिआ) अगर कफ़ खांसी हो तो (आर्सनिक) भूख मन्द और शरीर दुर्बल हो तो [सलफ़र] देना चाहिये।

फ़ीवर एन्तारिक् या महीन ज्वर

यह ज्वर भीतर अपना असर करता है इस ज्वर

वाले को कभी खाँसी कभी पसरी में दर्द, कभी दस्त आने ऐसे२ उपसर्ग युक्त महीन ज्वर होता है जब खाँसी होवे तो [बेलोडोना] देना पसुरी का दर्द हो तो [ब्रायोनिआ] दस्त आते हों तो [आर्सनिकू] देने से फायदा होगा सिर्फ ज्वर ही हो तो [एरेनिआ] देना अच्छा है इससे जल्द फ़ायदा होगा ।

फीवरटाईफोण्ड या ज्वरातीसार

प्रथम पेट मे दर्द, अजीर्ण और पतले दस्तों का आना इनके संग थोड़ा २ ज्वर होकर अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करता है इस्को ज्वरातीसार कहते है जब थोड़ा ज्वर और ज्वर में पतले दस्त वा आंव संयुक्त दस्त आवें तो [पलसेटिला] देना चाहिये बहु काल तक दस्त होने से रोगी अत्यन्त दुर्बल होजावे भीतर ज्वर बना रहे अत्यन्त प्यास रहे तो [भरेडूम्]देना चाहिये ।

कफ या खांसी

फुस २ नाली में कफ जमजाने से खाँसी पेदा होती

हैं खाँसी दो प्रकार की है सूखी वा गीली खाँसी मात्र में [वेलोडोना] उलटा पलटा से देना फ़ायदे मन्द होता है। यदि पुरानी खांसी होवे तो [मरकरी] [सलफ़र] [कलकेरिआ] [एमाटिमटाटर] इनमे से कोई एक औषधी दी जावे फ़ायदा होगा यदि खांसी रात में ज़ियादह उठे तो [मरकरीको०] [वेलोडोना] उलटा पलटा से देना चाहिये सूखी खांसी में पहले [एकोनाईट] फ़ायदा करता है खांसते २ मुख लाल वर्ण हो गले मे सरसराट, निद्रा का नाश, माथा दुखे, और शरीर गरम हो तो [वेलोडोना] देना;प्रातः काल उठतेंई खाँसी उठे छाती पेट दूखे, कफके साथ लोहूगिरे तो [आर्सनिक] सूखी खाँसी से छाती फटती सी मालूम हो खाँसी से पहले जी मचरा वे पीला या सफ़ेद कफ़ निकले तो [व्रायोनिआ] खांसते समय स्वास रुके कफ़ बोले और निकले नही तो(इपिका)वहुत दिन की खाँसीसे शरीर दुर्वल हो जावे छाती भारी रहे दिन में सुपेद वा पीरा कफ निकले रात में सूखी खाँसी उठे तो [सलफर] देना चाहिये खाँसी से

गला बैठ जावे तो [मरकरीसो०] देना उचित है अत्यन्त खासे गला बैठामा, छाती में दर्द, तो (फासफर्स) अच्छी दवा है।

अगर खासी से अवाज बैठ जावे तो [मरकरी] या [स्पन्जीआ] और जो खासी सुरू होतेई अवाज बैठ जावे कफ बहुत गिरे ठंढ से ज्यादा होवे या अजीर्ण जिसमें प्रधान कारण है पुरानी होवे तो [हिफरसल्फर] या [नोक्समवोमिका] [ब्रायोनि] और बच्चों की खांसी में [क्यमोमिला] यदि खासी के साथ कै होवे तो (इपिका) और छाती खांसने में दुखे वा पसरी दुखे तो [ब्रायोनि-] [फासफरस] उल्टा पल्टा मे देना चाहिये यदि खांसी मे स्वास उखड़े तो [आर्सनिक]

गलक्षत याने गले के रोग

गले के भीतर कफ बोले, बार २ खांसी आवे, और गला दुखे, आग जले तो [लिकेसिस] देना चाहिये यदि मनुष्य अत्यन्त दुर्बल हो गलेके भीतर कफ होवे तो [आर्स-

निक] गले के भीतर शुष्कता होवे, बोली बिगड़ जावे, ज्वर भी हो भीतर सरदी मालूम हो तो (एकोनाईट) गला धक२ करे चहरे का रंग लालहो तो (बेलोडोना) देने से अवश्य फायदा होगा।

लिकोरिआ या श्वेत प्रदर

स्त्रियो के यह रोग अकसर होता है इसमे रुधिर प्रधान कारण है जब रुधिर रुक कर आवे या जादा, धात की रुकावट से गर्म्मी उत्पन्न होकर रुधिर पानी हो जावे और यही निकलना सुरू होवे इसको श्वेत प्रदर कहते हैं (एकोनाईट) या [पलसेटिला] इसकी अच्छी दवा है इसके देने से जल्द फायदा होता है।

मीरोरिलजा या रक्तप्रदर

स्त्रियों के ऋतूकाल के पीछे या प्रसव होने से पीछे कवी २ लोहू पेसाव के रास्ते से जारी होकर स्त्रियों को

अत्यंत दुर्वल कर देता है कवी थोड़ा पसीना आकर मूर्छा भी होजाती है इस रोग के रहने से दृष्टि मंद होजाती इस रोग वाली स्त्रियों के हाथ पैर ठंडे पड़जाते है शरीर शिथल रहता है भूख वन्द होजाती है यह रोग मृत्यू के समान होता है ऋतूकाल से पहले रुधिर जारी होजावे वा ऋतू होकर वहुत दिन तक जारी रहै।

कुच, छाती, शिर, पेट, पेड़ू में दर्द होवे तो [कलकेरिआ] देने से फ़ायदा होता है। यदि लोहू काला गट्टे २ रुक २ के निकले या थोड़ा २ निकले पहले पेट में दर्द, और जी मचलावे, सिर दुखे, क़ब्ज़िअत रहे तो (नक्सवो०) अत्यन्त रक्त श्राव होने से पहले प्रसव समय कासा दर्द होवे तो [स्यावाइना] यदि रक्त काला और पतला हो तो (पलसेटिला) देना उचित है यदि बुढ़ापे में एक दम् से ज़ियादा निकल कर वन्द होजावे तो [इपिका] या [सिकेलि] यदि दुर्वल हो, और रक्त थोड़ा जलके समान श्रवे तो [चायना] देने से फ़ायदा होता है या (सिकेली) यदि ज़ियादा महनत से या चोट लगने से रक्त गाढ़ा निकले तो (आर्सनिक) प्रदर वाली स्त्रियों को चिन्ता

न करने दे और जादा रक्त जावे उस काल में औरत के पीठ के नीचे तकीआ रखकर ठंडी जगे में सुलावे नाफ के नीचे ठंडे पानी से भीगा हुआ कपड़ा ज़रूर रखना चाहिये हर वखत गरम चीज़ों से परहेज़ रखना चाहिये ।

किड्नी०ब्लोटफ्लाम याने लंगीमें लोहूआना

यह रोग स्त्री पुरुष दोनों के होता है जब जलन होकर लंगी के साथ लोहू आवे तो (एकोनाईट) यदि घाव होकर लोहू आवे तो (मरकरी) अगर भीतर की गर्मी से आवे तो (सलफ़र) देना चाहिये यह मरज आतशक वाले स्त्री पुरुषो के होता है ।

हेमीप्लीजिआ याने पक्षाघात

यह रोग शरीर के अर्द्ध भाग को शिथल कर देता है सर्दी लगकर मुख वा शरीर सिथल वा टेढ़ा पड़जावे इस कालकूआ भी कहते हैं इस रोग में (एकोनाईट) वहुत फ़ायदा करता है यदि वादीसे दक्षिणाङ्ग सिथल हो

जावे या मूत्रेन्द्री, गुदा सिथल होवे तो (रस्टकक्स) देना उचित है पक्षाघात सांघातिक रोग प्रायः अच्छा होने में कम आता है दवा इसकी (वेलोडोना) और (मरकरी) भी है।

वाद या वादी

तरुणावस्था में थोड़ी २ वादी रहै और वादी सौई ज्वर हो या किसी मुकाम दर्द हो दिन में थोड़ा २ ज्वर रहै रात्रि में जादा बढ़े तो (एकोनाईट) देना मुफीद है वादी से चकत्ते और पास लाल वर्ण नेत्रन में सुरखी मुख लाल वर्ण मस्तक में रक्ताधिक्य होकर दर्द हो तो (वेलोडोना) देना चाहिये वादी से शरीर चक २ करे छुरी सै काटनेकीसी वेदना हो तो (आर्सेनिक) या (मरकरी) देने से फायदा होगा।

कूख ज्वाला

अम्लाधिक्य होने से समै पाकर कूख में ज्वाला

उत्पन्न होती है थोड़े दिन में कूख ज्वाला से शुक्रपात होने लगता है ऐसी अवस्था मे (नोक्सवोमिका) देना उचित है यदि इस्से उपकार न दखें और बहुत दिन का रोग हो जावे तो (कलकेरिआ) देना अच्छा है ।

एसीडिटी या छाती से खट्टी डकार ।

जब मनुष्य की छाती में पित्त की खटाई इकट्ठी हो जाती है तब छाती में जलन और खट्टी डकार आने लगती हैं इस्में (नोक्सवोमिका) देना चाहिये । अथवा (पलसेटिला) यदि डकार के साथ हरे पीले पित्त निकले तो (इपिका) दैना चाहिये ॥

धनुर्वाय ।

यह रोग अनेक प्रकार से उत्पन्न होता है रुधिर के दूषित होने से कभी शरीरस्थ वायु से कभी सन्यपात ज्वर से गर्भ के भीतर चोट लगने से कभी अत्यन्त सर्दी से शरीर धनुष की तरह बांका होजाता है रोगी शरीर

को इधर उधर पटकता है ऐसी अवस्था में पहले (एको-नाइट) दैना मुफ़ीद होता है एक दिन में ४ वा ६ खु-राक़ खिला कर दूसरे दिन (आर्निका) या (वेलोडोना) यही इस रोग की मुख्य औषधी है।

ऐक्सीडैन्ट या चोट लगना।

शरीर में किसी जगह चोट लगकर दर्द होजाने पर (आर्निका) दैना मुफ़ीद होता है चोट लगकर ज़ियादह दर्द होने पर (लींडम प्लास्तरी) लोसन बनाकर लगाने से फ़ायदा होता हैं लोसन ठीक रीति से बनाकर कपड़ा भिगो जहां चोट का दर्द हो वहां बांधना चाहिये।

गांठों का दर्द।

रुधिर में पहले गर्मी और बाद उसके सरदी पहुंचने से खाली मुक़ामों में गांठ पैदा होतीं हैं यथा कान के नी-चे, बगल में, राग में जिस्को वद कहते हैं इत्यादि।

गांठों में दर्द और आग जलने पर [वेलोडोना] मुफ़ीद है यदि गांठों में राध पड़ गई होतो [हेपर सलफ़र] देना उचित है अगर गांठ सख़्त होकर फूट जावे तो [सलफ़र] परन्तु इतना ख़याल रहै कि बद की गांठ पर [मरकरी] खाने को देना अच्छा है यदि पारा खाने से गांठ हुई हो तो [हेपर सलफ़र] यदि गांठ सूज कर अत्यन्त दर्द करे तो [रसटक्स] देना चाहिये ॥

ख्रिन्सी या कन्ठमाला ।

यह रोग मग़ज़ के ख़ून का पानी होकर गले के आस पास गांठ उत्पन्न करता है मुद्दत तक यह रोग रहता है इस्की औषधि [स्पंजिआ] खिलाना वड़ा मुफ़ीद है ॥

मस्तक शूल ।

मस्तक में रक्ताधिक्य होने से शूल होवे तो (एको-

नाइट) [वेलोडोना] उलटा पलटा से देना चाहिये रक्ता धिक्य वाले मनुष्य के नेत्र सुर्ख रहते हैं अगर मस्तक मे चमक चले तो [वेलोडोना] यदि भोजन के पीछे वा पहले या हवा लगने से भ्रमण करने से सोकर उठे जब मस्तक में शूल मगज़ में भन्नाटा चक्कर आने पर [नोक्स-वोमिका] यदि दुर्वलता से दुखे तो [चायना] देना मुफ़ीद है सरदी से वा गरमी से माथा दुखे तो [क्यमोमिला] मस्तक भारी रहे तो [नोक्स] यदि छींक बहुत आवै नाक से पानी निकले शरीर में सरदी मालूम पड़े वा दर्द होने पर [मरकरी सोलोविलस] देना चाहिये कवजीअत से माथा दुखे शूल चलें तो [ब्रायोनिआ] अकसीर है सब शरीर दुर्वल हो और माथा दुखे आखों में अन्धकार सा रहै तो [जलसेमिनं] देना चाहिये

ओलाटसाट आई या आँख दूखना

नेत्र लाल वर्ण अत्यन्त ज्वाला फुके पानी बहुत निकल कर करावे एवं अल्प ज्वर होवे ऐसी अवस्था में

(एकोनाइट) यदि चोट लगकर नेत्र दुखें तो (आर्निका) सरदी लगकर आँख दूखें अत्यन्त ठीड़ आने पर(आर्सनि०) नेत्र अत्यन्त लाल·वर्ण वेदना जादा होवे तो (वेलोडोना) खाने से और (वेलोडोना लोसन) आंख में गेरने से फायदा होता है यदि वहुत दिन से नेत्र पीड़ा हो तो (सलफर) विशेष फायदा करता है या (कलकेरीआ) (हेफरसलपर) उलटा पलटा से देना चाहिये।

ल्वीडिङ्नौ या नकसीर

मस्तक में रक्ताधिक्य होने से और मगज़ में गरमी पहुंचने सै नाक के रास्तेसेखून निकलता है ऐसी अवस्था मे (एकोनाईट) (वेलोडोना) उलटा पलटा से देना चाहिये यदि चोट लग के नकसीर चले तो [आर्निका] अगर श्रम करने से चले तो [रसटक्स] धातू की गरमी सै चलै तो [चायना] वा [सीपिआ] शरीर दुर्वल होने सै चलै तो [चायना] वा [सीकेली] देना मुफीद है यदि काला बूंद२ रूधिर निकले तो [हेमेमिलिस] देना चाहिये।

वार २ रक्त श्राव होवे तो [कलकेरआिआर्सनिक] [सलफर] देना अच्छा है।

हिमरोइड या ववासीर

गुदा के अग्रभाग की नस फूलकर मांसकड़ा होकर मस्सा उत्पन्न होता है यही मस्सा बढ़कर बाहर निकल आवे उस्को वाह्य मस्सा कहते हैं और जो भीतर हो उस्को अन्त मस्सा कहते हैं इन्ही मस्सों से लोहू आता है और खुजार चलै उसको वादी बवासीर कहते हैं गुदा में दर्द वहुत हो मस्सा लाल फूला होवे और खून जारी होवे तो (एकोनाईट) देना मुफ़ीद है यदि अत्यन्त दर्द और आगजले और शरीर दुर्वल होवे तो (आर्सनिक) देना चाहिये दर्द के संग वाहर के मस्से से लोहू निकलने पर (हेमेमिलिस) खाने को और हेमेमिलिस लोसन से मस्से को धोना यही इस रोग की महौषधी है जब कवाज़ि-अत से बवासीर का लोहू जारी होवे तो (हाइड्रेसाटिस) और जो साधारणता से लोहू जावै या खुजार चले ऐसी अवस्था मे प्रातःकाल (सलफ़र) और सोती दफ़ै

(नोक्स वोमिका) एक २ खुराक खाना चाहिये अगर यही दवा ८ दिन तक खिलाने से फायदा न करे तो ४ या ९ दिन को दवा खाना मोकूफ़ करे और बाद फिर देना शुरू करे फ़ोरन आराम होगा ववासीर वाले को माँसादि कठिन वस्तु खाना मने है शीघ्र पचनै वाली वस्तु खाना चाहिये ।

प्लूरिसी या पसरी का दर्द

यह दर्द वादी और कफ मे गरमी पहुंच कर होता है (एकोनाईट) (आर्सनिक) (ब्रायोनिआ) (सलफर) (कलोसेन्स) इन दवाओं मै से किसी एक दवा के सेवन करने से दर्द को फायदा होता है यादि दर्द जोरसे जादा होवेतो १९ । १९ मिनट में दवा देना उचित है

सिफलिस या उपदंश

दूषित स्त्रियों से गमन करने से पुरुष के गरमी होती है उक्त रोग वाले पुरुष के वस्त्र पहरने या स्पर्श करने से भी रोग होता है गरमी का विष शरीर में प्रवेश होकर अनेक रोगों को उत्पन्न करता है ।

यथा सूजन, फोड़ा, छाले, बद, खून विगड़ना, इत्यादि रोग वहुत से होते हैं और माता पिता के दूषित वीर्य से उत्पन्न जो बच्चा होता है उसके भी यह रोग होता है इस रोग के होतेई (मरकरी सोलो०) देना चाहिये इस रोगसे वद पैदा हुई हो तो (वेलोडोना) यदि रोगी ने अधिक पारा खाया हो तो (नाइटिक एसिट) और जो खून फिसाद होतो (केलिहाई) (ओरम) एसिट फोसफरस) क्रमसे देतेर हो यदि हड्डी ओंमै दर्द होतो (केलीहाई) देना वड़ा मुफीद है पारे के सवव से मुखनासिका मै घावहोतो (मरकी) देने से फायदा होंता है

इस्प्रेमेटोरिया या वीर्ज का जल्द निकल जाना ।

यह रोग बहुत मनुष्यों के होता है गर्म्मी से वीर्ज कम जोर और पतला होकर स्वप्न में वा स्त्रियों की वात सुनते ही या स्त्रियों के पास वैठने सै वीर्ज फोरन निकल जाता है इसी तरह वहुत रोज में मनुष्य दुर्वल होकर सन्तान हीन होता है जिससे लाजिम है कि

(एसिटफोस रफस)या [सलफर] [मरकरी] इन दवाईओं में से किसी एक दवाई का सेवन करैं।

इमपोटंस या नपुंसकता

अत्यन्त शुक्रक्षय, भय, शोक, मानासिक उद्वेग, खटाई खाना हर वख्त इन्द्री का चैतन्य रहना, अच्छी २ वस्तु खाना, अत्यन्त लाल मिरच का खाना, इत्यादि कारणों सै रति शक्ति हीन होजाती है इच्छा करने सै कामों द्वीपन नहीं होता यदि होवे तो वीर्ज पतन इन्द्री सिथल होकर उत्थान शक्ती जाती रहें मन सर्वदा सुस्त रहै किसी काम मे मन न लगे और शरीर के वल की धारण शक्ती जाती रहै यदि शुक्रक्षय होने का हीं प्रधान कारण होवे तो [चायना] देना वड़ा मुफीद होगा भय, शोकादि कारणो से नपुंसकत्व होने पर [नोक्स वोमिका] देना चाहिये यदि कामोद्वीपन होतेई वीर्जः क्षय होजावे तो [फोस फरस] देना मुफीद होगा।

होमिओं पैथिक चिकित्सातत्व
वैद्य झल्ला स्वामी कृत रामदासकी मंडी
आयुर्वेवोक्त मथुरा औषधालय